Dr. Madan Paswan, History.
Class: B.A. Part-II (Hons.) P-III.
Topic: Iqta System...

Lecture No. 21. (1)
Date: 16.10.2020
Continue Lecture...

लेकिन छपाई प्राचीन भारत में ज्ञात नहीं थी। कुछ विद्वानों के अनुसार मुसलमानों ने उसे यहाँ लाया।

कागज निर्माण और जिल्दसाजी : प्राचीन भारत में शिलाओं, ताम्र पट्टिकाओं, रेशम और सूती वस्त्र तथा विशेष रूप से निर्मित ताड़ की पत्तियों एवं भुर्ज की छाल का उपयोग लेखन के साधन के रूप में किया जाता था। ताड़ की पत्तियों तथा भुर्ज की छाल (भुर्जपत्र) का प्रयोग पुस्तक लेखन में किया जाता था।

कागज का निर्माण सबसे पहले प्रथम शताब्दी ई० में चीन में हुआ था। यहाँ बाँसों की लुग्दी से कागज बनाया गया। चीनियों से 8वीं शताब्दी में अरब मुसलमानों ने कागज निर्माण की कला सीखी। इसके बाद अरबों ने चिथड़ों तथा पुराने मलमल से कागज बनाना विकसित किया।

भारतीय संभवतः 7वीं शताब्दी में कागज से परिचित हो चुके थे। लेकिन अभी भी इसका प्रयोग लेखन सामग्री के रूप में नहीं किया जाता था।

दिल्ली सल्तनत के काल में कागज का प्रयोग मुख्य रूप से पुस्तकों, फरमानों तथा विभिन्न व्यावसायिक तथा प्रशासनिक दस्तावेजों हेतु होता था।

दिल्ली सल्तनत में कागज बड़ी मात्रा में उपलब्ध था, लेकिन कागज निर्माण के केन्द्र कम थे और वे दूर-दूर अवस्थित था। चीनी यात्री माहुआन, जिसने 14वीं शताब्दी में भारत की यात्रा की थी, से ज्ञात होता है कि बंगाल में कागज का निर्माण होता था।

Contd...

कागज पर पुस्तकों के लिखने की प्रवृत्ति के साथ ही जिल्दसाजी की एक नवीन कला का भारत में विकास हुआ क्योंकि उसकी तकनीक प्राचीन लेखन सामग्री की पत्तियों को जोड़ने की कला से भिन्न थी।